लेख

1

अभिनय के ज़रिए शिक्षा

अक्षय कुमार दीक्षित*

बच्चों को सिखाने के कई माध्यम हैं, जिनमें से एक माध्यम अभिनय/नाटक भी है। अभिनय द्वारा ऐसी कई महत्वपूर्ण सूचनाएँ बच्चों को दी जा सकती हैं जो शायद किताबों द्वारा बच्चों को उतनी आकर्षित न करें। शिक्षण के दौरान अभिनय कला का किस प्रकार उपयोग किया जा सकता है, यह जानने के लिए पढ़िए लेख-अभिनय के ज़रिए शिक्षा।

दृश्य-1

सविता जी कक्षा 5 की अध्यापिका हैं। उन्होंने निश्चय किया कि चुनाव, लोकतंत्र, संसद तथा वोट का महत्त्व जैसी ज़रूरी लोकतांत्रिक संकल्पनाओं को स्पष्ट करने के लिए आज एक गतिविधि का आयोजन करेंगी। उन्होंने कक्षा में घोषणा की-कि आज हम अपनी कक्षा का एक नेता चुनेंगे। चुने गए नेता की ज़िम्मेदारी होगी कि कक्षा में यदि किसी बच्चे को कोई परेशानी है तो वह उसकी सहायता करेगा। बताइए, कौन बच्चा नेता बनना चाहता है।

यह सुनकर बच्चे एक-दूसरे के चेहरे ताकने लगे। कुछ देर बाद तीन बच्चों ने खड़े होकर नेता बनने की इच्छा प्रकट की। सविता जी ने कहा, ''सुमन, अमित और सलमा आज नेता बनना चाहते हैं पर कक्षा का नेता तीनों में से एक ही होगा। तो बताइए, इन तीनों में से किसे नेता बनाया जाए।'' कक्षा के सभी बच्चे तीनों का नाम लेने लगे। कोलाहल-सा मच गया। सविता जी कुछ समय तक मुस्कुराती रहीं, फिर बच्चों को शांत करते हुए बोलीं, ''ऐसा करते हैं, हर बच्चे को एक पर्ची दे देते हैं। आप अपनी-अपनी पर्चियों पर उस बच्चे का नाम लिख देना, जिसे आप अपना नेता बनाना चाहते हैं। जिस बच्चे के नाम की सबसे ज़्यादा पर्चियाँ होंगी, उसे नेता बना दिया जाएगा।'' सब बच्चे खुश हो गए। सविता जी ने आगे कहा, ''पर्चियों पर नाम लिखने से पहले, हम अपने तीनों साथियों को बुलाते हैं ताकि वे हम सबको बता सकें कि हम उनका नाम अपनी पर्ची पर लिखकर उनको क्यों चुनें।''

* सी-633, जे.वी.टी. गार्डन, छतरपुर एक्सटेंशन, नयी दिल्ली-110074

तीनों 'उम्मीदवार' बच्चों ने कक्षा के सामने आकर बारी-बारी से बताया कि उन्हें क्यों चुना जाना चाहिए। यह भी बताया कि नेता बनने के बाद वे कक्षा के लिए क्या-क्या करेंगे। सभी बच्चों के चेहरे पर चमक और मुस्कान आ गई। इसके बाद एक डिब्बे में सभी बच्चों ने पर्चियाँ डालीं। एक बच्चे ने उनको गिनकर घोषित किया - हमारी कक्षा की नेता है सलमा। सलमा को 15 पर्चियाँ मिली हैं, अमित को दस और सुमन को नौ।

सब बच्चों ने ताली बजाकर नेता का स्वागत किया। इसके बाद सविता जी ने इस प्रक्रिया को चुनावी प्रक्रिया से जोड़ते हुए बच्चों को याद दिलाया कि उनके माता-पिता भी इसी तरह अपना नेता चुनते हैं। चुनावी शब्दावली जैसे वोट, उम्मीदवार, घोषणापत्र आदि का मतलब बच्चे समझ चुके थे। क्या आप इस उदाहरण में अभिनय तथा अभिनेताओं को पहचान सके? इस उदाहरण से स्पष्ट है कि कक्षा में अभिनय तथा नाटकीकरण द्वारा जटिल संकल्पनाएँ भी कितनी सरलता से समझी जा सकती हैं।

नाटक और अभिनय का शिक्षा से बहुत गहरा संबंध है। कक्षा में अभिनय का उपयोग शिक्षा के इतिहास जितना ही पुराना है। जब शिक्षक कुछ बातचीत करते हैं तो वह भी अभिनय का ही एक रूप है। यदि इसे शिक्षण से जोड़ दिया जाए, तो सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को और अधिक रोचक व प्रभावी बनाया जा सकता है।

कक्षा या विद्यालय में औपचारिक और अनौपचारिक अभिनय के अनेक अवसर मौजूद होते हैं। उदाहरण के लिए, विशेष दिवसों के समारोह में, शिक्षक-अभिभावक संघ की सभा में, प्रार्थना सभा या बाल सभा में और कक्षा सभा में। अभिनय का प्रयोग केवल भाषा में ही नहीं, बल्कि सभी विषयों को अधिक सरल, रोचक तथा जीवन के निकट लाने के लिए किया जा सकता है।

दृश्य -2

रमेश जी कक्षा 3 को पर्यावरण अध्ययन पढ़ा रहे हैं। मक्खी-मच्छरों से पैदा होने वाली बीमारियों और उनकी रोकथाम के विषय को उन्होंने कक्षा में अभिनय के माध्यम से स्पष्ट करने की योजना बनाई।

एक बच्चा बन गया मच्छर, एक बीमार तथा एक मित्र।

मच्छर- (दर्शकों से) मैं हूँ मच्छर। मुझे खून चूसना अच्छा लगता है। मौका मिलते ही मैं खून चूसना शुरू कर देता हूँ। इंसानों को पता भी नहीं चलता और मैं खून पीकर उड़ जाता हूँ। पर मैं खून के बदले में एक उपहार देकर जाता हूँ। मैं बदले में मलेरिया दे देता हूँ। हा-हा-हा !

बीमार बच्चा- डॉक्टर ने कहा है कि मुझे मलेरिया है। उन्होंने यह भी बताया है कि मलेरिया किसी मच्छर के काटने से हुआ है।

दोस्त- मच्छर तो इतने छोटे हैं, हर तरफ हैं। उनसे छुटकारा कैसे पाएँ?

बीमार बच्चा- उनपर तो मच्छर भगाने वाली दवाओं का भी असर नहीं होता। पर कोई तो कमज़ोरी होती होगी मच्छरों की। आखिर आते कहाँ से हैं इतने मच्छर?

दोस्त- मैंने देखा है जहाँ पानी भरा पड़ा हो, वहाँ मच्छर ज़्यादा दिखते हैं। अगर इधर-उधर भरे पड़े पानी को हटा दें तो मच्छर भी हट जाएँगे।

मच्छर-(दर्शकों से) अरे हटेंगे ही नहीं, खत्म भी हो जाएँगे। पानी में ही तो हम पैदा होते हैं। हाय! अब क्या होगा!

सारे बच्चे पानी भरे डिब्बों को खाली करते हैं। मच्छर भाग जाता है।

उपर्युक्त उदाहरण द्वारा हम देख सकते हैं कि अभिनय द्वारा किसी विषय की सौ प्रतिशत सूचना या जानकारी दे देना अनिवार्य नहीं है।

अभिनय/नाटक द्वारा दर्शक किसी समस्या या परिस्थिति के बारे में सोचना प्रारंभ कर दें तो यह भी महत्वपूर्ण सफलता मानी जाएगी। इसी प्रकार, अभिनय के लिए संदर्भ तथा प्रसंग अधिक महत्वपूर्ण है न कि साज़ो-सामान या दूसरे ताम-झाम।

नि:संदेह वस्त्राभूषण, मुखौटों और वाद्ययंत्रों द्वारा नाटक में चार चाँद लग जाते हैं। इन्हें हम आस-पास के स्रोतों से बिना कोई अतिरिक्त पैसा खर्च किए जुटा सकते हैं या स्वयं भी बना सकते हैं। परंतु यदि किसी कारणवश यह संभव न हो तो इनके बिना भी काम चलाया जा सकता है। उदाहरण के लिए, गणित विषय में मुद्रा का प्रयोग और योग, घटाना आदि में कुशलता बढ़ाने के लिए बाज़ार में खरीदारी का अभिनय करवाया जा सकता है। जहाँ बच्चे क्रेता, विक्रेता बनेंगे तथा काल्पनिक वस्तुओं को खरीदेंगे और बेचेंगे।

अभिनय द्वारा केवल विषयों की जानकारी भर का आदान-प्रदान नहीं होता बल्कि अनेक ऐसे कौशलों तथा रुचियों का विकास होता है जो किसी अन्य तरीके से नहीं हो सकता। उदाहरण के लिए, साथियों के साथ सहयोग, अपनी बारी का इंतज़ार करना, दूसरों को सम्मानपूर्वक सुनना, कल्पना तथा तर्क द्वारा रचना, (संवाद अपने मन से बनाकर कहना) दर्शकों के सामने आत्मविश्वासपूर्वक प्रस्तुति, स्व-अनुशासन, चिंतन आदि कौशल।

अभिनय द्वारा शिक्षक और बच्चों के बीच की दूरियाँ पाटी जा सकती हैं तथा कक्षा में अपनेपन की भावना में वृद्धि होती है।

❑❑❑